JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान समस्याएं और लोहिया की सप्त क्रांतियाँ

हेमलता रौतवार
रिसर्च स्कॉलर
राजनीति विज्ञान विभाग,
जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर।

डॉ अनुपम चतुर्वेदी,
सहायक आचार्य एवम् शोध निदेशक
(राजनीति विज्ञान)
राजकीय बाँगड महाविद्यालय,
पाली।

शोध सार

डॉ. राममनोहर लोहिया राजनीतिक विचारक,चिंतक और स्वप्न दृष्टा थे। लेकिन उनका चिंतन राजनीति तक ही सीमित नहीं रहा। लोहिया की क्रांतिकारी दर्शन का आधार अन्याय के खिलाफ विरोध करना था।उन्होंने आर्थिक,सामाजिक,धार्मिक सांस्कृतिक और राजनीतिक सभी पहलुओं पर अपना दृष्टिकोण और विचार रखा। व्यापक दृष्टिकोण,दूरदर्शिता उनकी चिंतन धारा की विशेषता थी। उन्होंने भारत में समाजवादी विचारधारा का प्रारंभ किया एवं उसे भारतीय संस्कृति और परिस्थितियों से जोड़कर विकसित किया। उनके जीवन में उन्होंने आदर्शों का निर्माण एवं निर्वाह किया। वह वर्तमान भारत को विकसित खुशहाल और संपन्न बनाने की दिशा दिखा सकते है। डॉ. राम मनोहर लोहिया एक ऐसे भारतीय समाज की संरचना का स्वप्न देखते थे जिसमें शोषण उत्पीड़न, दमन, बेरोजगारी एवं भुखमरी ना हो। आज लोहिया जी भौतिक रूप से हमारे बीच में नहीं है किंतु उनके सामाजिक और राजनीतिक विचार एवं उनका संपूर्ण जीवन चित्रण हमें वर्तमान भारत में व्याप्त विभिन्न समस्याओं के निराकरण एवं सामाजिक, राजनीतिक आदर्शों के निर्माण व उनके निर्वहन करने में अमूल्य योगदान दे सकता है ।

सप्त क्रांति के माध्यम से उन्होंने समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याओं का समाधान बताया है जो वर्तमान समस्याओं के निराकरण में भी उतना ही कारगर है जितना उनके समय में था। सप्त क्रांति में उन्होंने नर-नारी असमानता के विरुद्ध क्रांति ,रंगभेद एवं प्रजाति भेद के विरुद्ध क्रांति, जातीय समानता के लिए क्रांति ,आर्थिक समानता के लिए क्रांति, विदेशी गुलामी के विरुद्ध एवं विश्व लोक राज्य के लिए क्रांति, जीवन में अन्यायपूर्ण हस्तक्षेप के विरुद्ध लोकतांत्रिक क्रांति, सत्याग्रह में विश्वास व हथियारों का निशस्त्रीकरण के लिए क्रांति का सिद्धांत दिया और इन सभी क्रांतियों को एक साथ लाने का आह्वान किया। इन क्रांतियों के माध्यम से लोहिया जी समाज के हर क्षेत्र में समानता स्थापित करना चाहते थे ।

बीज शब्द

सप्त क्रांति, समाजवाद, शस्त्रीकरण, सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा ,पूंजीवाद, साम्यवाद

प्रस्तावना

हम आज आजादी का अमृत महोत्सव बना रहे हैं.आजादी के बाद 75 वें वर्ष में आज हम पीछे मुड़कर देखते हैं, तो अब तक के सफर में भारत ने अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए विश्व में अपनी अलग पहचान बनाई है और भारतीय समाज ने भी बहुत उन्नति की है। इसके बावजूद भी हम अपनी क्षमताओं का पूर्ण रूप से उपयोग नहीं कर पाए हैं यही कारण है की आज भी भारतीय समाज अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। वर्तमान में बेरोजगारी महंगाई गरीबी सांप्रदायिकता भारत को जकड़े हुए है ,हमारा समाज आज भी ऊंच-नीच जाति धर्म गरीब अमीर आदि में बटा हुआ है और कहीं ना कहीं यही इन सभी समस्याओं का मूल है। भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व आज स्त्री-पुरुष भेदभाव रंग और नस्ल आधारित भेदभाव शस्त्रीकरण जातिगत भेदभाव आर्थिक असमानता दिन पर दिन बढ़ती हुई हिंसा से पीड़ित है तमाम तकनीकी और वैज्ञानिक विकास के बावजूद आज भी गरीबी शोषण और अन्याय विद्यमान है।

भगवान बुद्ध ने कहा था **"जो मेरा धर्म है वही धर्मकाय है ,वही मेरे ना रहने पर इस राह पर चलने वालों के लिए पथ प्रदर्शक ,पाथेय और रास्ता होगा।"** महान व्यक्तियों के द्वारा चला गया रास्ता उनके विचार व चिंतन एक ऐसा प्रकाशित संभव बनाते हैं जो निरंतर भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन करता है जब समाज में कोई समस्या आती है तो इन्हीं के विचारों व चिंतन से प्राप्त ज्ञान समाधान का मार्ग प्रशस्त करता है।

आज भारत एवं विश्व में विद्यमान उपर्युक्त समस्याओं की जड़ में मुख्य कारण यह है कि हम अपने महान अग्रजों के विचारों व उनके दिखाए रास्ते का अनुसरण करने में असफल रहे हैं आज की समस्याओं के, निवारण एवं स्वतंत्रता समता और संपन्नता के साथ-साथ सहिष्णुता सौहार्द और शांति स्थापित करने के लिए लोहिया जी के दिखाए रास्ते पर चलकर बेहतर राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है लोहिया का व्यापक दृष्टिकोण दूरदर्शिता उनकी चिंतन धारा की विशेषता थी इसके साथ-साथ दर्शन, साहित्य, इतिहास,भाषा आदि के बारे में भी उनके विचार मौलिक थे। लोहिया एक नई सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि और निर्माता थे ।

लोहिया ने एक साथ सप्तक्रांतियों का आह्वान किया था । यह सप्तक्रांति आर्थिक व सामाजिक न्याय तथा समाजवाद का आधार स्तंभ है। यह सप्तक्रांतिया लोहिया के समाजवाद के आदर्श थी लोहिया सभी अन्याय के खिलाफ एक साथ जिहाद बोलने के पक्षपाती थे। ये सप्तक्रांतिया हैं-

1. नर नारी समानता के लिए क्रांति

आज आजादी के इतने वर्ष बाद भी देश में लैंगिक भेदभाव की स्थिति बनी हुई है और महिलाओं पर अत्याचार थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। सरकार हो संसद विधानसभा हो विधान परिषद आदि सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेने वाले उच्च पदों पर महिलाओं की भागीदारी उनकी आबादी की तुलना में बहुत ही कम है। लोहिया जी ने नर नारी के बीच व्याप्त बहुरूपी असमानता को सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकन किया। उन पर गंभीर रूप से विचार किया और भविष्य के लिए पथ प्रदर्शित किया । शताब्दियों से चली आ रही नर नारी असमानता को उन्होंने समाज के विकास में बहुत बड़ी बाधा माना ।

लोहिया जी का मानना था कि नारी के सक्रिय सहयोग के बिना राजनीति अपूर्ण है। राजनीति में नर नारी को समान सक्रिय भाग लेना चाहिए। प्रत्येक क्षेत्र में महिला की हिस्सेदारी होनी चाहिए। आज का पुरुष अपनी स्त्री को एक ओर तो सजीव, क्रांतिपूर्ण एवं ज्ञानी चाहता है और दूसरी ओर अपने अधीनस्थ रखना चाहता है, पुरुष की यह परस्पर विरोधी भावनाएं बहुत ही बिडंबनापूर्ण,काल्पनिक एवं वास्तविक है क्योंकि परतंत्रता की स्थिति में ज्ञान सजीवता एवं तेज का प्रादुर्भाव कैसे हो सकता है। लोहिया जी स्त्रियों के पर्दे में रहने और पुरुष द्वारा उनके शोषण या अनादर के घोर विरोधी थे। उन्होंने समाज में व्याप्त हर उस संस्कृति नैतिकता,परंपरा और मूल्य का विरोध किया जो स्त्री को पराधीन बनाने की नीयत रखते हैं। सप्त क्रांति में लोहिया जी के वैचारिक दर्शन में दोनों पक्ष दिखते हैं जो स्त्रियों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को दिखाते हैं तथा समाज की दकियानूसी प्रथाओं का विरोध करते हैं। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है कि धर्म,राजनीति, व्यापार और प्रचार सभी मिलकर उसकी जड़ को संजोकर रखने की कोशिश कर रहे हैं, जिसे संस्कृति के नाम से पुकारा जाता है। लोहिया भारतीय संस्कृति एवं उसके मूल्यों के विरुद्ध नहीं थे अपितु वह संस्कृति में फैले ऐसे फूहड़पन के खिलाफ थे जिसे नैतिकता का चोला पहनाकर महिलाओं पर थोपा गया है। यदि वास्तव में समाजवाद की स्थापना करनी है तो हिंदू नर के पक्षपाती दिमाग को ठोकर मार मार के बदलना है। नर नारी के बीच में बराबरी कायम करनी है तो नर नारी समानता के लिए नारी सशक्तिकरण पर बल देना होगा। लोहिया जी का कहना था कि **"नारी को गठरी के समान नहीं बल्कि इतना शक्तिशाली होना चाहिए कि वक्त आने पर पुरुष को भी गठरी बना अपने साथ ले चले"**

नर नारी समानता पर उनका प्रसिद्ध निबंध **"द्रोपदी या सावित्री"** सबसे अधिक प्रसिद्ध रहा है। इसमें उन्होंने लिखा है कि **हिंदुस्तान की नारी का आदर्श द्रोपदी को होना चाहिए सीता या सावित्री नहीं** क्योंकि द्रोपदी बहुत ज्ञानी, समझदार,साहसी,बहादुर व हाजिरजवाब महिला थी।उन्होंने सीता व सावित्री के पतिव्रत धर्म का महिमामंडन करने वालों से सवाल किया कि क्यों हमारे इतिहास में केवल पत्नी व्रत को बार-बार दोहराया गया है और पुरूष को कहीं स्त्री हेतु बाध्य नहीं किया गया। इसी तरह लोहिया को पद्मिनी के जौहर की बजाए रजिया की बहादुरी पसंद थी। किसी भी समाज की उन्नति उसकी नारी के सशक्तिकरण के समानुपाती होती है। भारतीय समाज एवं राष्ट्र को अगर विश्व पटल पर सबसे आगे पहुंचना है तो भारतीय नारी को सशक्त और सक्षम होना ही होगा और हम सबको मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि नारियों को समान अधिकार, समान स्वतंत्रता जीवन के हर स्तर पर मिले।

2. रंगभेद व प्रजाति भेदभाव के विरुद्ध क्रांति

रंगभेद की समस्या भारत में ही नहीं पूरे विश्व में विद्यमान रही है। महात्मा गांधी जी के साथ जो दक्षिण अफ्रीका में काले होने के कारण गोरों ने व्यवहार किया ऐसा ही लोहिया जी के साथ अमेरिका में व्यवहार किया गया था। स्वयं लोहिया को काले रंग के कारण अमेरिका के एक होटल में घुसने से मना कर दिया गया और लोहिया के विरोध करने पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। वर्तमान में भी अमेरिका में यह समस्या खत्म नहीं हुई है। लोहिया जी ने रंगभेद एवं जाति भेद की समाप्ति के लिए हावर्ड विश्वविद्यालय में एक भाषण के दौरान अमेरिका वासियों को भी सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ने के लिए प्रोत्साहित किया और आशा प्रकट की कि रंगभेद को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शीघ्र ही निकाल फेंका जाएगा,क्योंकि मानव का मस्तिष्क इस रोग पर विजय प्राप्त करने के लिए पर्याप्त रूप से स्वस्थ और सक्षम है। परंतु दुख की बात है कि आज भी यह समस्या अपनी जड़ें फैलाए हुए हैं और विश्व की विकसित देशों में भी विद्यमान है। भारतीय समाचार पत्रों में शुभ विवाह कॉलम में जाति भेद और रंगभेद की विद्रूपता को प्रत्येक दिन देखा जा सकता है। भारतीय समाज में आज भी शादी के लिए लड़के लड़कियों के गोरे रंग को अधिक महत्व दिया जाता है। लोहिया जी के अनुसार **कृष्ण और कृष्णा (द्रोपदी)** भारतीय चरित्रों के ऐसे उदाहरण हैं जो अपनी सुंदरता और गौरव में बेजोड़ हैं।

वास्तव में डॉक्टर लोहिया द्वारा श्यामवर्णीय द्रोपदी को इतना अधिक महत्व देने और उसे भारतीय नारियों से आदर्श मानने का आह्वान करने का कारण यह है कि उन्होंने हमेशा चमचमाती गोरी त्वचा से अधिक स्वाभिमानी और बौद्धिक नारी को आदर्श माना। संसार में अफ्रीका व अमेरिका जैसे देशों में जिस प्रकार के अत्याचार एवं अन्याय आज भी वहां के अश्वेतों साथ किए जा रहे हैं वे बहुत निंदनीय और अमानवीय हैं। वहां पर गोरे लोगों की आबादियों के बीच काले लोगों के प्रवेश को निषिद्ध माना जाता है। अश्वेत लोगों को मानव अधिकारों से आज भी वंचित रखा जाता है। लोहिया जी रंगभेद को सिर्फ भारतीय नहीं बल्कि वैश्विक संदर्भ में देखते थे। रंगभेद लोहिया जी के समय जैसा था वैसा ही आज भी विश्व में विधमान है। आज समाज में लोहिया जी के सौंदर्य शास्त्रीय दृष्टिकोण को प्रचारित, प्रसारित करने की जरूरत है, जहाँ वे बौद्धिक सौंदर्य तथा आत्मनिर्भरता को त्वचा के रंग से अधिक महत्व देते हैं। लोहिया जी का मानना था की रंगभेद का सिर्फ भारत से ही नहीं बल्कि पूरे विश्व से समूल नाश होना चाहिए तभी विश्व शांति व समृद्धि संभव है और इसलिए लोहिया जी रंगभेद के खिलाफ क्रांति करना चाहते थे।

3. जाति प्रथा के विरुद्ध क्रांति

जाति प्रथा एक सामाजिक बुराई है जो प्राचीन समय से भारतीय समाज में मौजूद है। वर्षों से अनेक समाज सुधारक लोगों के द्वारा इसकी आलोचना की गयी लेकिन जाति व्यवस्था हमारे देश में सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर अपनी पकड़ मजबूत बनाई हुई है। डॉ राम मनोहर लोहिया भारत में जातिगत सुधारों के बड़े समर्थन कर्ता रहे हैं। लोहिया जी ने जाति प्रथा को एक मानसिक रोग बताया और कहा कि **"जाति अवसरों को रोकती है, अवसर ना मिलने से योग्यता कुंठित हो जाती है और कुंठित योग्यता फिर अफसरों को बाधित करती है"** ,लोहिया जी के द्वारा जाति व्यवस्था की समाप्ति के लिए चौतरफा हमला करने की बात कही गई है। जिसमें धार्मिक, सामाजिक ,आर्थिक, राजनीतिक हमला शामिल है। उनका मानना था की सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार कर्म पर होना चाहिए ना की जन्म के आधार पर। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को उच्च समझना जाति प्रथा को बनाए रखना है । एक व्यक्ति के उच्च वर्ण में केवल जन्म लेने से वो उच्च नहीं हो जाता बल्कि उसमें उच्चता के अनुकूल योग्यता व गुण होने चाहिए। जाति प्रथा के कारण भारत का समग्र जीवन निष्प्राण हो गया है। इसी कारण भारत दासता का शिकार हुआ। लोहिया जी ने जाति बंधनों को ढीले करने हेतु सुझाव भी दिए जिनमें प्रमुख हैं (1) सहभोज (2) अंतरजातीय विवाह (3) प्रत्यक्ष चुनाव तथा (4) वयस्क मताधिकार। उनकी मान्यता थी कि **जाति प्रथा को तोड़ने का एक ही उपाय है वह है उच्च एवं निम्न जातियों के बीच रोटी एवं बेटी का संबंध।** अंतरजातीय विवाह और सह भोज से आवश्यक रूप से समता का भाव पैदा होगा और जाति प्रथा को तोड़ने के लिए प्रत्यक्ष चुनाव और वयस्क मताधिकार द्वारा चुनाव कराए जाएंगे वैसे वैसे जाति के बंधन ढीले पढ़ते जाएंगे। पिछड़ी जातियों को उनकी सामूहिकता में समृद्ध बनाने के लिए स्वाभिमान और निडरता महत्वपूर्ण है। आम लोगों में राजनीतिक चेतना भरने और राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए जाति प्रथा की समाप्ति आवश्यक है। वे पिछड़े एवं दलितों को आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से सक्षम बनाना चाहते थे और उनकी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में सहभागिता बढ़ाना चाहते थे। उनका दृढ़ विश्वास था कि पिछड़ी जातियों को नेतृत्व करने का अवसर मिलना चाहिए। इसीलिए उन्होंने सार्वजनिक जीवन में कम से कम साठ प्रतिशत आरक्षण की बात कही और सुझाया की यह परिवर्तन कानूनी संरक्षण के माध्यम से किया जाना चाहिए। वे पिछड़े वर्गों को दिए जाने वाले अधिमान्य अवसर को लेकर आशान्वित थे जिससे भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर सके।

4. आर्थिक समानता के लिए क्रांति

लोहिया जी ने सप्त क्रांति में गरीबी और अमीरी के अंतर को सबसे प्रमुख मुद्दा माना है। उन्होने गरीबी और अमीरी के अंतर को सभी विषमताओं की जड़ कहा है। आर्थिक विषमता राष्ट्र के लिए कैंसर के सामान भयानक होती है। इसकी उपस्थिति में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था व्यर्थ हो जाती हैं, जो आज की प्रमुख समस्या है। आज बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी के कारण गरीब और अधिक गरीब होता जा रहा है। लोहिया जी गरीब और अमीर के अंतर को मिटाना चाहते थे। इस अंतर को मिटाने के लिए उन्होंने आर्थिक दर्शन दिया जिसके निम्नलिखित आधार है- (1) वर्ग-उन्मूलन (2) आय-नीति (3) मूल्य-नीति (4) अन्न-सेना एवं भूमि-सेना (5) भूमि का पुनरवितरण (6) आर्थिक विकेंद्रीकरण (7) राष्ट्रीयकरण अथवा समाजीकरण (8) खर्च पर सीमा। लोहिया जी के आर्थिक विचार वर्तमान की प्रमुख समस्याओं के निदान के लिए उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कि उनके समय थे। आर्थिक दर्शन के माध्यम से लोहिया जी भारत में आर्थिक समानता लाना चाहते थे। उनके अनुसार विश्व के अनेक देशों में आर्थिक विषमता के अनेक कारण रहे हैं परंतु भारत में आर्थिक विषमता का मूल कारण जाति व्यवस्था है। उच्च जातियों द्वारा निम्न जातियों का आर्थिक शोषण किया है। इस आधार पर भारतीय समाज को उन्होंने दो वर्गों में विभाजित किया एक शोषक वर्ग और एक शोषित वर्ग। शोषक वर्ग में उन्होंने उच्च जातियों के लोगों को रखा जैसे कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, कायस्थ आदि। इन्हीं लोगों में अधिकांश जमींदार एवं संपन्न घराने के हैं। सारे समाज की पूंजी इन्हीं के हाथों में एकत्रित हो गई है। शोषित वर्ग में उन्होंने ज्यादातर निम्न जातियां को रखा जो गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही हैं। उनका मानना था कि गरीब और अमीर के बीच की आय का अनुपात 1: 10 से अधिक नहीं होना चाहिए। वर्तमान में भी यह अंतर दिन पर दिन बहुत अधिक बढ़ता जा रहा है। उनका विश्वास था कि औसत आय किसी राष्ट्र की प्रचुरता का द्योतक है, किंतु औसत आय की वृद्धि अन्य कारकों के साथ-साथ प्रधान रूप से श्रमिक की क्षमता पर निर्भर करती है। इसके लिए लोहिया जी ने छोटी मशीनों पर आधारित उद्योग पद्धति पर बल दिया। उन्होंने अपने समाजवादी कार्यक्रमों में भी बड़े उद्योगों के राष्ट्रीयकरण पर बल देते हुए 'खर्च पर सीमा' नामक प्रस्ताव में दिया जिसमें व्यक्तिगत व्यय पर एक सीमा का निर्धारण का सुझाव था। देश में बढ़ती महंगाई के उपाय के लिए भी लोहिया जी ने प्रत्येक क्षेत्र में ठोस और शोषण मुक्त मूल्य नीति निर्धारित करने का सुझाव दिया। भोजन एवं आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में उतार चढ़ाव को रोकने हेतु वस्तु की एक निश्चित सीमा के अधिक स्वामित्व पर प्रतिबंध का प्रस्ताव रखा। आर्थिक असमानता को कम करने के लिए उनके विचार मौलिक थे।

5. विदेशी गुलामी के विरुद्ध और स्वतंत्रता व विश्व लोकराज्य के लिए क्रांति

विदेशी गुलामी के विरुद्ध लोहिया ने जीवन भर संघर्ष किया। उनके जीवन के शुरुआत ही स्वतंत्रता संग्राम में हुई। लोहिया बचपन में ही गाँधी जी के साथ स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ गए थे। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में लोहिया ने गुप्त रेडियो का संचालन कर आंदोलन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत छोड़ो आंदोलन में 21 महीने तक भूमिगत भूमिका निभाने के बाद लोहिया को मुंबई में 1944 को गिरफ्तार किया गया। पहले लाहौर किले में और फिर आगरा में उन्हें कैद रखा गया। लाहौर जेल में ब्रिटिश पुलिस ने उन्हें अमानुषिक यातनाएं दी। स्वतंत्रता के बाद भी गोवा मुक्ति आंदोलन में लोहिया ने भाग लिया और गोवा को पुर्तगालियों से मुक्त कराने में विशेष योगदान दिया। विदेशी गुलामी के विरुद्ध संघर्ष में वह अनेक बार जेल गए और जेल की यातनाएं सही।

लोहिया ने विश्व नागरिकता का सपना देखा था। अंतरराष्ट्रीय जगत हेतु लोहिया ने कई सिद्धांत प्रतिपादित किए, जिनमें से प्रमुख हैं– विश्व समाजवाद का नवदर्शन, संयुक्त राष्ट्र संघ के पुनर्गठन का नवीन आधार, अंतर्राष्ट्रीय जाति प्रथा के उन्मूलन का प्रयास, विश्व विकास समिति की पहल, विश्व सरकार का स्वप्न, अंतर्राष्ट्रीयतावाद, निशस्त्रीकरण का सशक्त प्रतिपादन और साक्षात्कार का सिद्धांत। लोहिया ने हर प्रकार की गुलामी का प्रखर विरोध किया चाहे वह भौतिक हो, मानसिक हो या आध्यात्मिक। उनका मानना था की किसी भी राष्ट्र को अपने सिद्धांतों व नीति को त्याग कर दूसरे पूंजीवादी या साम्यवादी शक्तिशाली राष्ट्रों का पिछलग्गू नहीं बनना चाहिए, क्योंकि सिद्धांत या नीति से ही शक्ति का निर्माण होता है ना की शक्ति से नीति का।

6. निजी जीवन में अन्यायी हस्तक्षेप के विरुद्ध लोकतांत्रिक पद्धति के लिए क्रांति

निजी जीवन में अन्याय के हस्तक्षेप के विरुद्ध उन्होंने लोकतांत्रिक तरीकों से क्रांति का समर्थन किया। लोहिया अहिंसा और बौद्धिक स्वतंत्रता दोनों में विश्वास करते थे। इसलिए वे चाहते थे कि मानव को अत्याचारी और अन्यायी कानूनों की के विरोध के लिये विश्व में अहिंसात्मक अवज्ञा का अधिकार होना चाहिए। टी.एच ग्रीन के समान उनकी भी मान्यता है कि शासन जैसी संस्था का लक्ष्य व्यक्ति के विकास में बाधक सभी तत्वों को दूर करके सभी अनुकूलताओं को पैदा करना है, उन्हें पोषित करना है जिससे मानव का सहज और पूर्ण विकास हो सके। वे मानते थे कि कदाचित यह संस्थाएं ही विकास में बाधक बन सकती हैं। जो शोषण एक पूंजीपति करता है, वही शोषण एक गुट ,राजनीतिक दल अथवा शासन भी कर सकता है। रक्षक भक्षक बन सकता है। जब ऐसा हो तब जनता को यह अधिकार है कि वह उसे उखाड़ सके। लेकिन महात्मा गांधी और टी.एच. ग्रीन के समान लोहिया साधन की शुद्धि अहिंसा और सविनय अवज्ञा द्वारा ही ऐसा करना चाहते थे ना कि कार्ल मार्क्स के हिंसात्मक तरीकों के द्वारा।लोहिया ने सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा की सीमाओं को तोड़ा। उन्होंने व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा को सामूहिक बनाया। गांधी जी के बड़े व्यक्तित्व तक ही सीमित इस सविनय अवज्ञा को जनसाधारण तक विस्तृत किया। सविनय अवज्ञा सिद्धांत का विश्लेषण करते हुए लोहिया जी ने कहा कि '' सिविल नाफरमानी अथवा अन्याय से शांतिपूर्वक लड़ना अपने आप में एक कर्तव्य है और कर्तव्य में आगा पीछा या नफा नुकसान नहीं देखा जाता l'' और यही तरीका अन्याय के विरुद्ध क्रांति का लोकतांत्रिक तरीका है।

7. सत्याग्रह में विश्वास व हथियारों का निशस्त्रीकरण

लोहिया गांधीजी के सत्याग्रह से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने विश्व के कोने–कोने में अन्याय और विषमता के विरुद्ध सत्याग्रह छेड़ने पर जोर दिया और निशस्त्रीकरण की कल्पना को व्यवहारिक रूप प्रदान किया। उनके मत में बीसवीं शताब्दी के 2 मौलिक आविष्कार गांधी और अणु बम हैं। गांधीजी न्याय और अन्याय के प्रतिकार के प्रतीक है और अणु बम अन्याय का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी और अणु बम एक दूसरे के विपरीत सिद्धांत हैं। लोहिया हथियारों के सबसे खिलाफ थे वे अणु बम ही नहीं बल्कि परंपरागत हत्यारों को भी समाप्त करना चाहते थे। उनके मतानुसार जब परंपरागत हथियार समाप्त हो जाएंगे तभी अन्याय का पूर्णरूपेण विनाश होगा। विषमता और अन्याय को समाप्त करने और समता तथा न्याय को लाने के लिए लोहिया की दृष्टि में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सत्याग्रह किए जाने चाहिए।न्याय और समता की स्थापना के लिए यदि हिंसात्मक उपाय किए जाते हैं तो फिर हिंसा के द्वारा उसका प्रतिकार होगा और परिस्थिति बर्बरतापूर्ण, पशुतापूर्ण, भयंकर तथा संसार नाशक होगी। तब तो अराजकता का साम्राज्य होगा और न्याय, समता, अहिंसा के स्थान में हिंसा, अन्याय और विषमता पुन: छा जाएगी। गांधीजी के पश्चात गांधीजी के अहिंसक आंदोलनों और निशस्त्रीकरण संबंधी सिद्धांतों के प्रबल और प्रभावशाली समर्थक लोहिया जी ही थे। उन्होंने सभी क्षेत्रों में अपने अथक परिश्रम, मौलिक प्रतिभा, निष्कपट मानव सेवा के द्वारा विश्व जागरण का संदेश दिया। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विषमता तथा अन्याय के प्रबल विरोधी डॉक्टर लोहिया अपने जीवन पर्यंत विश्व शांति, विश्व सरकार, विश्व संसद आदि के लिए संघर्षरत रहे। परंतु इस कल्पना को साकार करने के लिए वे निशस्त्रीकरण को अति आवश्यक मानते थे। उनके निशस्त्रीकरण संबंधी विचारों से स्पष्ट होता है कि वे अपने दिल और दिमाग से शस्त्रों की समाप्ति चाहते थे।

निष्कर्ष–

राम मनोहर लोहिया जी ने समाज में व्याप्त अनेक सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के समाधान हेतु विचार व प्रयास किए।दुर्भाग्यवश उनके बाद किसी ने भी उनका अनुसरण नहीं किया। उनके जीवन काल में भी उनको यह सम्मान और महत्व नहीं मिला जिसके वह अधिकारी थे।स्वयं लोहिया जी ने कहा था, **"लोग मेरी बात सुनेंगे लेकिन मेरे मरने के बाद"।** उनके मरणोपरांत उन्हें और उनके विचारों को ख्याति एवं सम्मान तो प्राप्त हुआ, लेकिन उनका अनुसरण नहीं हो पाया। शायद यही कारण है कि अनेक समस्याएं जो पहले थी वो और विभत्स रूप में वर्तमान में हमारे समक्ष खड़ी हुई है। डॉ राम मनोहर लोहिया ने सप्तक्रांति द्वारा आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, दाम बंदी, नर–नारी समता, रंगभेद, चमड़ी सौंदर्य, जाति प्रथा, मानसिक गुलामी, सांस्कृतिक गुलामी, दामों की लूट, शासक वर्ग की विलासिता जैसे असंख्य सवालों के उत्तर हमें दिये है, जो वर्तमान भारतीय परिस्थितियों में उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उस समय थे। डॉ राम मनोहर लोहिया के सप्त क्रांति के विचार अमूल्य निधि हैं। इसके उपयोग द्वारा हम सर्वसंपन्न एवं खुशहाल नव भारत का निर्माण सुनिश्चित कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

- डॉ. राममनोहर लोहिया: समता और संपन्नता, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2020
- डॉ. राममनोहर लोहिया: भारत के शासक ,लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2021
- डॉ राम मनोहर लोहिया सप्तक्रांति या नवहिंद प्रकाशन, हैदराबाद ,प्रथम संस्करण 1966
- ताराचंद दीक्षित: डॉ. राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन ,लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2013
- डॉ राममनोहर लोहिया: भारत माता धरती माता लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2020
- मस्तराम कपूर: आधुनिक भारत के निर्माता राममनोहर लोहिया प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 2015
- ओंकार शरद: लोहिया एक प्रमाणिक जीवनी लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2021
- डॉक्टर कन्हैयालाल त्रिपाठी :डॉ. राममनोहर लोहिया और सतत समाजवाद प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2013
- कुमार कौशिक: राममनोहर लोहिया और मैं: लोहिया के विचारों की प्रासंगिकता, एड्यूक्रीएशन पब्लिकेशन, दिल्ली ,2019
- मस्तराम कपूर: डॉ. राममनोहर लोहिया –रचनावली अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली ,2012
- इंदुमती केलकर: डॉ राम मनोहर लोहिया जीवन और दर्शन, अनामिका प्रकाशक, एवं वितरक लिमिटेड ,नई दिल्ली, 2010
- https://www.mediavigil.com
- https://archive.org/stream/in.
- https://hindi.feminisminindia.com